3 एक कहानी यह भी

- मन्नू भंडारी

उन्मुखीकरण

नारी में अनेक गुणों का समन्वय है। उसमें प्राकृतिक अनुराग है, सौंदर्यानुभूति है, संवेदना है और साथ ही साहस भी। वेदों में भी नारी की प्रशस्ति गायी गयी है। इस तरह यह सिद्ध होता है कि नारी ही दिव्य स्वरूपिणी है।

प्रश्न

1. समाज के विकास में नारी की क्या भूमिका है?
2. नारी को दिव्य स्वरूपिणी क्यों कहा गया होगा?
3. किसी महान नारी द्वारा किये गये कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख कीजिए?

उद्देश्य

छात्रों को लेखन की विविध शैलियों से परिचित कराते हुए आत्मकथा लेखन विधा का ज्ञान कराना, उसकी भाषा शैली से अवगत कराना और उन्हें आत्मकथा लेखन की प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

आत्मकथा का अर्थ है - 'अपनी कहानी'। आत्मकथा में लेखक निष्पक्ष भाव से अपने गुण-दोषों की सम्यक अभिव्यक्ति करता है और अपने चिंतन, संकल्प, विचार एवं अभिप्राय को व्यक्त करने हेतु जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित करता है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि इस साहित्यिक विधा में लेखक अपने वैयक्तिक जीवन के ही खट्टे-मीठे अनुभवों को क्रमानुसार स्मृति के आधार पर लिपिबद्ध करता है। इस तरह बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन आत्मकथा का मूल तत्व होता है। लेखिका ने इसमें अपने संघर्षमय जीवन की घटनाओं को चुनौतियों के साथ सुंदर भाषा शैली में लिपिबद्ध किया है।

लेखिका परिचय

मन्नू भंडारी एक कुशल लेखिका हैं। इनका जन्म सन् 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ है। नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण करने, उनकी मानसिक स्थिति का विश्लेषण करने तथा युगीन समाज का यथार्थ वर्णन करने में वे अत्यंत लोकप्रिय हैं। मैं हार गयी, तीन निगाहों की एक तस्वीर, अकेली, एक प्लेट सैलाब, यही सच है, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदिवारी के बीच बैठ कर देश की स्थितियों को जानने समझने का जो सिलसिला पिताजी ने शुरु किया था उन्होंने वहाँ से खींच कर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया।

शीला अग्रवाल के भाषण से मन्नू भंडारी ने प्रेरणा पाकर देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया वे एक महान लेखिका के रूप में उभर कर आयी हैं। आइए, उस महान लेखिका के बारे में जानेंगे।

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरु होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अख़बारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्व विहीन माँ...सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिता जी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गये थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल-बूते और हौंसले से अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरु किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरु कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किये उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर

SCERT TELANGANA

दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पायी? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखायी देती है...बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाये बैठा रहता है!समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए...स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता!

प्रश्न

1. मन्नू भंडारी के पिताजी कैसे स्वभाव के थे?
2. लेखिका के बचपन के समाज व आज के समाज में क्या अंतर है?
3. आजकल के पड़ोस कल्चर के बारे में लेखिका के क्या विचार हैं?

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फर्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं...केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका...न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता। खैर, जो भी हो, अब यह पैतृक-पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले-सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो...तो कमरों में गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह भी रचाये, पास-पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता

SCERT TELANGANA

था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भँगिमा, भाषा किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गये थे। उसी समय के दा साहब अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही 'महाभोज' में इतने वर्षों बाद कैसे एकाएक जीवित हो उठे, यह मेरे अपने लिए भी आश्चर्य का विषय था...एक सुखद आश्चर्य का।

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी- उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् 1944 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकाता चली गयी। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गये। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नये सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिता जी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे जुटाये जाते थे, पिता जी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। घर में आये दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 1942 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किये, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् 1945 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आयी, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल...जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश

SCERT TELANGANA

करवाया। मात्र पढ़ने को,चुनाव करके पढ़ने में बदला...ख़ुद चुन-चुनकर किताबें दीं...पढ़ी हुई किताबों पर बहसें कीं तो दो साल बीतते-न-बीतते साहित्य की दुनिया शरत-प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गयी और फिर तो फैलती ही चली गयी। उस समय जैनेंद्र जी की छोटे-छोटे सरल-सहज वाक्यों वाली शैली ने बहुत आकृष्ट किया था। 'सुनीता' (उपन्यास) बहुत अच्छा लगा था, अज्ञेय जी का उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' पढ़ा ज़रूर पर उस समय वह मेरी समझ के सीमित दायरे में समा नहीं पाया था। कुछ सालों बाद 'नदी के द्वीप' पढ़ा तो उसने मन को इस कदर बाँधा कि उसी झोंक में शेखर को फिर से पढ़ गयी...इस बार कुछ समझ के साथ। यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था...पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनायी धारणाओं के आगे प्रश्न चिह्न ही नहीं लग रहे थे, उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था। इसी संदर्भ में जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', भगवती बाबू का 'चित्रलेखा' पढ़ा और शीला अग्रवाल के साथ लंबी-लंबी बहसें करते हुए उस उम्र में जितना समझ सकती थी, समझा।

4. पिताजी ने रसोईघर को भटियारखाना क्यों कहा था?
5. लेखिका के पिताजी उन्हें बहसों में बैठने को क्यों कहा करते थे?
6. लेखिका का साहित्य से संबंध कैसे जुड़ा?
7. शीला अग्रवाल से लेखिका कैसे प्रभावित हुई?

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरु किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् 1946-47 के दिन...वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आये लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध,सारी वर्जनाएँ, सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है,यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरु हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

यश-कामना बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिता जी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए...कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो। इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गयी थी। एक बार कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बतायें कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों

SCERT TELANGANA

न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला। ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी...पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर! चार बच्चे पहले भी पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।'' गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गये थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गयी। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना। लेकिन जब माँ ने आकर कहा कि वे तो खुश ही हैं, चली चल, तो विश्वास नहीं हुआ। गयी तो सही, लेकिन डरते-डरते। ''सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा...सारा कॉलिज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है? प्रिंसिपल बहुत परेशान थी और बार-बार आग्रह कर रही थी कि मैं तुझे घर बिठा लूँ, क्योंकि वे लोग किसी तरह डरा-धमकाकर, डाँट-डपटकर लड़कियों को क्लासों में भेजते हैं और अगर तुम लोग एक इशारा कर दो कि क्लास छोड़कर बाहर आ जाओ तो सारी लड़कियाँ निकलकर मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगती हैं। तुम लोगों के मारे कॉलिज चलाना मुश्किल हो गया है उन लोगों के लिए।'' कहाँ तो जाते समय पिता जी मुँह दिखाने में घबरा रहे थे और कहाँ बड़े गर्व से कहकर आये कि यह तो पूरे देश की पुकार है...इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? बेहद गद्‌गद् स्वर में पिता जी यह सब सुनाते रहे और मैं अवाक्। मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हकीक़त थी।

एक घटना और। आज़ाद हिंद फ़ौज़ के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्‌वान था। जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़ (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाजी। इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी, ''अरे, उस मन्नू की तो मत मारी गयी है पर भंडारी जी आपको क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आज़ादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे-कैसे उलटे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह। हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान-मर्यादा, इज़्ज़त-आबरू का ख़याल भी रह गया है आपको या नहीं?''

वे तो आग लगाकर चले गये और पिताजी सारे दिन भभकते रहे, ''बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।''

इस सबसे बेखबर मैं रात होने पर घर लौटी तो पिता जी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं, अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बैठे थे। मुझे

8. मन्नू के पिताजी उनके घर से निकलने पर क्यों रोक लगाना चाहते थे?
9. 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के बारे में तुम क्या जानते हो?
10. लेखिका के पिताजी किन अंतर विरोधों में रहकर जीवन बिता रहे थे?
11. मन्नू से नाराज़ पिताजी उन्हें देखकर गर्व का अहसास क्यों कर रहे थे?
12. 15 अगस्त, 1947 के महत्व के बारे में बताइए।

SCERT TELANGANA

देखते ही उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, आओ, आओ मन्नू। मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया। 'आई एम रिअली प्राउड ऑफ़ यू'...क्या तुम घर में घुसे रहते हो भंडारी जी...घर से निकला भी करो। 'यू हैव मिस्ड समथिंग, और वे धुआँधार तारीफ़ करने लगे वे बोलते जा रहे थे और पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। भीतर जाने पर माँ ने दोपहर के गुस्से वाली बात बतायी तो मैंने राहत की साँस ली।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा!यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिता जी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे। एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

सन् 1947 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने नोटिस थमा दिया-लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया।

हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गयी।

शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि...15 अगस्त 1947

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इस पाठ की लेखिका ने एक स्त्री होते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। अब आप बताइए कि सामाजिक विकास में विद्यार्थी क्या योगदान दे सकते हैं?
2. समाज-सुधार कार्यों में स्वयंसेवी संस्थाओं की क्या भूमिका है?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के बारे में बताइए।
2. लेखिका की अपने पिताजी से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
3. लेखिका ने अपने बचपन के बारे में क्या कहा?

(इ) पाठ के आधार पर निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हक़ीक़त थी।
2. बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस

SCERT TELANGANA

मन्नू का घर से बाहर निकलना।

3. जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गयी।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

23 मई, 1954 का दिन भारतीय इतिहास में एक स्मरणीय दिन माना जाएगा। एक साहसी महिला ने अन्य भारतीयों को कुछ कर दिखाने की प्रेरणा दी है। भारतीय पर्वतारोहियों को इस संबंध में प्रेरणा तो उस समय से ही प्राप्त हो रही है, जब सर्वप्रथम तेनसिंह नोर्के ने सागरमाथा पर विजय प्राप्त की थी। तब से निरंतर पर्वतारोहियों के दल इस जोखिमपूर्ण साहसिक अभियान के लिए स्वयं को समर्पित करते आ रहे हैं। भारतीय पर्वतारोहण संस्थान के प्रयास भी पर्वतारोहियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। समय-समय पर भारतीय पर्वतारोहियों ने अन्य देशों के साहसिक अभियानों का मार्ग-दर्शन भी किया है। भारतीय सेना कई अभियान दलों के साथ शिखर यात्रा पर पहुँचे हैं।

आज संसार का यह सर्वोच्च शिखर केवल पुरुष पर्वतारोहियों के लिए ही सुरक्षित नहीं है। जुंको ताबेई ने जो मार्ग विश्व की महिलाओं के लिए खोल दिया, उस पर चलने के लिए आज विश्व की अनेक महिलाएँ साहसिक कार्यों में आगे आ रही हैं। भारतीय महिला पर्वतारोहियों ने इस क्षेत्र में आगे आने की कई मंज़िलें तय की थीं।

प्रश्न

1. भारत के इतिहास में 23 मई, 1954 एक स्मरणीय दिन क्यों माना गया?
2. सर्वप्रथम सागरमाथा पर किसने विजय प्राप्त की थी?
3. आज विश्व की अनेक महिलाएँ किन कार्यों में आगे आ रही हैं?
4. 'साहस' शब्द का विपरीतार्थक लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा? कैसे?
2. 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के मुकदमे के सिलसिले में विद्यालयों में कैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. ब्रिटीश शासन में भारतवासियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था? अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखिका के संघर्षमय जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

(इ) 1. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर आपको संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने का मौक़ा मिलें तो आपका भाषण क्या होगा? इस पर एक भाषण-लेख लिखिए।

(ई) समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. यश, धैर्य, सीमा, इशारा (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. बेहद, क्रोधित, सहनशक्ति, गर्मजोश (वाक्य प्रयोग कर शब्दार्थ लिखिए।)
3. लू उतारना, आग लगाना (मुहावरे का अर्थ लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
4. ताने-बाने, मान-मर्यादा (युग्म शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़कर उसके अनुसार लिखिए।

1. महत्वाकांक्षा, किशोरावस्था, दुर्बल (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
2. पोथी-पुराण, चौराहा, चारदिवारी (विग्रह कर समास पहचानिए।)

(इ) उदाहरण के अनुसार शब्दों को ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए जिससे उनके एकाधिक अर्थ स्पष्ट हों। पाठ में आये भिन्नार्थी शब्दों में से पाँच शब्द चुनकर लिखिए।

जैसे - आम 1. आम मीठा फल है। 2. आम जनता देश की स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ी।

(ई) अर्थ की दृष्टि से वाक्य पहचानिए और दिये गये उदाहरणों के अनुसार दो-दो वाक्य बनाइए।

1. वह काम कर रहा था।
2. तुम काम पर जाओ।
3. तुम काम पर मत जाओ।

परियोजना कार्य

(अ) किसी महिला अधिकार संरक्षण व विकास संगठन की सदस्या से भेंट कर महिला अधिकारों की जानकारी इकट्ठी कीजिए। आधुनिक समाज में महिला विकास के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं? इसका पता लगाकर एक सूची बनाइए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ मंगल, मानव और मशीन

–श्री विनोद रस्तोगी

पात्र-परिचय

मेधावी - मंगल लोक का एक वैज्ञानिक
मारुत - मेधावी का सहकारी।
भारतीय वैज्ञानिक
अंग्रेज वैज्ञानिक
अमेरिकी वैज्ञानिक
रूसी वैज्ञानिक
स्थान - मंगल-लोक के उत्तरी भाग का एक निर्जन स्थान।
समय - 23जून 1968 की रात

(स्थान खुला हुआ है। इधर-उधर अनेक प्रकार के यंत्र लगे हैं जिनमें मुख्य 'दूरदर्शी यंत्र', 'ध्वनियंत्र', 'आकर्षण-किरणयंत्र' तथा 'भाषा यंत्र' हैं। एक स्टूल पर छोटी-सी सुंदर किंतु दृढ़ पेटी है जो बंद है। मेधावी 'दूरदर्शी' यंत्र के समीप एक कुर्सी पर बैठा है। वह हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति है। वस्त्र बहुत पतले हैं, किंतु वे पारदर्शी नहीं हैं। हाथों में दस्ताने हैं। अतः दर्शकों को केवल उसका मुख ही दिखायी पड़ रहा है। मुख कुछ-कुछ मनुष्यों-सा होकर भिन्नता लिए है। मारुत 'ध्वनियंत्र' के समीप बैठा है। उसकी वेशभूषा भी वैसी ही है। दो-चार रिक्त स्टूल और कुर्सियाँ इधर-उधर रखी हैं। एक ओर से हरा और दूसरी ओर से लाल प्रकाश आ रहा है। मेधावी और मारुत के मुख (जो दर्शकों के सामने हैं) इस प्रकाश के प्रभाव से कुछ लाल और कुछ हरे-से दिखायी पड़ रहे हैं।

मेधावी : आज हम हिंदी भाषा का ही प्रयोग करेंगे। भाषायंत्र को हिंदी पर लगा दो।

मारुत : (मारुत उठकर यंत्र का स्विच दबाता है और पुनः अपने स्थान पर आ जाता है।) आज मैं भी भूलोक को निकट से देख सकूँगा गुरुदेव।

मेधावी : भूलोक देखने की इच्छा क्या तुम्हारे हृदय में भी है?

मारुत : हाँ गुरुदेव। आप तो कई बार वहाँ की सैर कर आये हैं। कुछ आप ही बताइए वहाँ के निवासियों के विषय में।

मेधावी : वहाँ मानव नाम का एक जीव रहता है, जिसकी महत्वाकांक्षा का कोई अंत ही नहीं है। उसने चंद्रलोक को तो जीत ही लिया है, अब वह हमारे पवित्र लोक पर भी अधिकार करने की सोच रहा है।

मारुत : (आश्चर्य से) अच्छा, तो मानव नाम का यह पशु अवश्य ही बहुत शक्तिशाली होगा।

मेधावी : वह स्वयं अपनी शक्ति का नाश कर रहा है, मारुत! उसका मस्तिष्क विकृत है।

मारुत : क्यों?

मेधावी : जो अपने ही बंधु-बांधवों के रक्त का प्यासा हो, वह पागल नहीं तो और क्या है?

SCERT TELANGANA

भूलोक में कोई सौंदर्य नहीं है, वह बहुत कुरूप है।

मारुत : कुरूप...?

मेधावी : हाँ, टूटा-फूटा, कटा, जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्र की छुरियों ने उसके खंड-खंड कर दिये हैं।

मारुत : तब तो व्यर्थ है मेरी जिज्ञासा। आप ही देखें उसे। मैं चित्रों से ही अपना काम चला लूँगा। अच्छा गुरुवर, आज भूलोकस्वामी भी हमारे लोक को देखने के लिए बड़े-बड़े आयोजन कर रहे होंगे।

मेधावी : क्यों नहीं, सामीप्य का लाभ सभी उठाते हैं। पर उनके यंत्रों में इतनी शक्ति नहीं है, जैसे हमारे यंत्रों में है। हम आज उनका घर-द्वार देख सकते हैं। और वे केवल हमारी दुनिया को ही देख सकते हैं।

(सहसा 'ध्वनियंत्र' से घरघराहट की आवाज़ आती है, जो निरंतर तीव्र होती जाती है। दोनों चौंक पड़ते हैं। मारुत भागकर 'ध्वनियंत्र' के समीप जाता है। मेधावी अपने यंत्र में आँख लगाकर ध्यान से देखता है।)

मारुत : (चीखकर आवेशयुक्त स्वर में) पृथ्वी की ओर से कोई वस्तु विद्युतवेग से इस ओर आ रही है। यह आवाज उसी की है गुरुदेव।

मेधावी : (यंत्र से हटकर) हाँ, कोई रॉकेट है, पर वह यहाँ तक कभी न पहुँच सकेगा। मानव का यह प्रयास, असफल रहेगा। (हँसकर) पृथ्वी का कीड़ा....हा...हा...हा...

मारुत : (निकट आकर) क्यों न हम अपनी आकर्षण किरणों से उस रॉकेट को खींच लें। मैं भी मानव नामधारी उस जीव को देख लूँ।

मेधावी : जैसी तुम्हारी इच्छा।

(मेधावी उठकर 'आकर्षण किरण यंत्र' के समीप जाता है और एक बटन दबा देता है। सहसा एक बिजली-सी कौंध जाती है। स्विच बंद करके वह फिर अपने स्थान पर आ जाता है।)

मेधावी : देख लो तुम भी इस पागल पशु को।

('ध्वनियंत्र' की आवाज़ बहुत तीव्र हो जाती है और फिर चरम उत्कर्ष पर पहुँचकर सहसा रुक जाती है। उससे प्रतिध्वनि गूँजती रहती है।)

मारुत : रॉकेट आ गया।

मेधावी : हाँ, कुछ दूर पर ही उतरा है। सावधान! मानव नाम का प्राणी आता ही होगा। (दोनों अपने-अपने स्थानों पर सँभलकर खड़े हो जाते हैं। एक क्षण बाद ही चार मनुष्य आते हैं। तीन सूट पहने हैं और एक सफेद चूड़ीदार पैजामा तथा काली शेरवानी। चारों ऑक्सीजन के यंत्र से लैस हैं। अतः दर्शकों को उनका रूप-रंग ठीक से नहीं दिखायी पड़ता। मारुत विस्मय और आश्चर्य से उनकी ओर देखता है।)

मेधावी : आप लोग इन्हें उतार क्यों नहीं देते?

(सब लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखते हैं।)

मेधावी : ओह, आप कदाचित इस पर आश्चर्य कर रहे हैं कि मैं हिंदी कैसे सीख गया। हम

SCERT TELANGANA

अखिल ब्रह्मांड की समस्त भाषाएँ जानते हैं। (भाषा यंत्र की ओर संकेत करके) भाषा संबंधी हमारी सभी कठिनाइयों को यह यंत्र दूर कर देता है। (सब बहुत ध्यान से यंत्र को देखते हैं।)

मारुत : उतार भी दीजिए ये यंत्र। मैं आप लोगों को ठीक से देखना चाहता हूँ।

एक व्यक्ति : (घुटी आवाज़ में) यह संभव नहीं। ऑक्सीजन.....।
ओह समझा। बिना ऑक्सीजन के आप लोग रह नहीं सकते। यहाँ ऑक्सीजन का अभाव है। (वस्त्रों से चार छोटी-छोटी गोलियाँ निकालकर प्रत्येक को देकर) खा लीजिए इन्हें और उतार दीजिए ऑक्सीजन के यंत्र। कोई कठिनाई नहीं होगी आपको।
(चारों व्यक्ति मुँह खोलकर गोली खा लेते हैं और फिर डरते-डरते यंत्र उतारते हैं। जब उन्हें बिना यंत्र के कोई कठिनाई नहीं होती, तो वे प्रसन्न होते हैं।)

मेधावी : अब अपना-अपना परिचय दीजिए।

पहला : मैं भारतीय वैज्ञानिक हूँ।

दूसरा : मैं अमेरिकी वैज्ञानिक हूँ।

तीसरा : मैं रूसी वैज्ञानिक हूँ।

चौथा : मैं अंग्रेज वैज्ञानिक हूँ।

मेधावी : (प्रसन्नता से) वैज्ञानिक मैं भी हूँ। पर आपका विज्ञान हमारे विज्ञान की तुलना में घुटना चलता शिशु है अभी।

भारतीय : (व्यंग्य से) अच्छा, और क्या, यह आप बताने की कृपा करेंगे कि आपका विज्ञान किस लोक का विज्ञान है?

मेधावी : (हँसकर) मंगललोक का।

अमेरिकी : तो क्या हम लोग इस समय मंगललोक में हैं?

मारुत : जी हाँ, और मैं यहाँ का एक वैज्ञानिक हूँ।

अंग्रेज : (प्रसन्नता से) ओह! हमने मंगललोक जीत लिया।

अमेरिकी : (बिगड़कर) यह रॉकेट हमारा है, मंगललोक की विजय का श्रेय हमें मिलेगा।

अंग्रेज : वाह! संसार की सर्वोच्च चोटी हमने जीती, मंगललोक की विजय भी हमारे बिना असंभव थी।

भारतीय : एवरेस्ट विजय हमारे बिना असंभव थी। मंगल लोक पर भी हमारा अधिकार है।

रूसी : (क्रुद्ध स्वर में) और, जैसे हमने कुछ किया ही नहीं। (अमेरिकी की ओर मुड़कर) तुम्हारी तो नीति ही सदैव पूँजीवादी रही है। मंगललोक पर हमारा अधिकार होगा, समझे? लाल मंगल पर लाल रूस का अधिकार। ओह, ...कितना सुखद.....कितना.....।

मेधावी : आप लोग व्यर्थ विवाद क्यों कर रहे हैं? आप किसी ने भी हमारा लोक नहीं जीता।

अमेरिकी : हमारा रॉकेट यहाँ पहुँचा या नहीं?

मेधावी : रॉकेट पहुँचा नहीं, लाया गया। हमने अपनी आकर्षण किरणों से उसे यहाँ खींच

SCERT TELANGANA

लिया। (हँसकर) मेरे सहकारी मारुत को मानव देखने की इच्छा थी, आप विजयी नहीं, हमारे बंदी हैं।

अमेरिकी : बंदी?

मेधावी : हाँ।

(सहसा अमेरिकी और रूसी विद्युत-वेग से अपने वस्त्रों से पिस्तौल निकालकर क्रमशः मेधावी और मारुत पर गोली छोड़ने लगते हैं। गोलियों का उन दोनों पर कोई असर नहीं होता। वे खड़े हँसते रहते हैं। पिस्तौलें खाली हो जाती हैं। मेधावी और मारुत को हँसता देख दोनों घबरा जाते हैं। उनके हाथों से पिस्तौलें छूटकर नीचे गिर जाती हैं।)

मेधावी : (हँसकर) और कोई अस्त्र - शस्त्र है? (सब अवाक् होकर उसका मुख देखते रहते हैं।)

मेधावी : हमने मृत्यु पर विजय पा ली है। ऐसा है हमारा विज्ञान। (अमेरिकी से) आपका हाइड्रोजन बम भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अमेरिकी : आप क्या जानते हैं हाइड्रोजन बम के बारे में?

मेधावी : हमसे भूलोक की कोई बात छिपी नहीं है। आप लोगों के लिए हमारा लोक भले ही जिज्ञासा का विषय हो, पर हम आपके विषय में सब कुछ जानते हैं। मैं तो कई बार भूलोक हो भी आया हूँ।

सब : (आश्चर्य से) अच्छा!

मेधावी : हाँ? जहाँ आपका रॉकेट उतरा है, वहीं आपने हमारा भी 'स्पेस-शिप' देखा होगा। बहुत शक्तिशाली है वह। हमारे सब यंत्र अद्भुत हैं। इस दूरदर्शी यंत्र से आप अपनी पृथ्वी स्पष्ट देख सकते हैं। आइए, देखिए। (सब बारी-बारी से देखते हैं। सबके मुखों पर आश्चर्य के चिह्न हैं।)

भारतीय : आश्चर्य है! अच्छा, आपने अभी कहा था कि आपने मृत्यु को जीत लिया है, तो क्या यहाँ सब अमर हैं।

मेधावी : हाँ, यह अमरों का लोक है। हमने अपनी सभी आवश्यकताओं पर विजय पा ली है। न हमें भूख लगती है, न प्यास। ये वस्त्र जो हमने पहने हैं, सहस्रों वर्ष पुराने हैं। ये न मैले होते हैं और न फटते हैं।

रूसी : आप कुछ खाते-पीते ही नहीं?

मेधावी : हमने एक ऐसी गोली का आविष्कार किया है, जिसे एक बार खा लेने से सौ वर्ष तक भूख प्यास नहीं लगती।

अमेरिकी : आपको न अन्न की चिंता है और न वस्त्र की? तब आप दिन भर करते क्या हैं?

मेधावी : निश्चिंत होकर गंभीर अन्वेषण कार्य करते हैं।

अंग्रेज : तो क्या यहाँ सब वैज्ञानिक ही हैं।

मेधावी : नहीं। कलाकार, कवि, लेखक, चित्रकार सभी हैं। सब अपनी-अपनी कलाओं के विकास के लिए ही प्रयत्नशील रहते हैं। स्वस्थ शरीर और स्वच्छ मन से ही शुभ कार्य हो सकते हैं। जानते हैं, हमारे लोक का नाम मंगललोक क्यों पड़ा?

SCERT TELANGANA

भारतीय : आप ही बताइए।

मेधावी : हम व्यक्ति, जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्र के हित से बहुत ऊपर उठकर समस्त ब्रह्मांड के हित की बात सोचते हैं। हमारा ध्येय विश्वकल्याण है।

भारतीय : आपके यहाँ जाति, धर्म, भाषा और शब्दों का भेद नहीं है?

मेधावी : नहीं। हमने आप लोगों की भाँति अपने लोक को काटा-छाँटा नहीं है। हम उस संस्कृति में विश्वास करते हैं जो एक और अविभाज्य है। आप लोग स्वार्थी हैं। हम हर भूवार को परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह भूलोकवासियों को सद्‌बुद्‌धि और पारस्परिक सद्‌भावना प्रदान करें।

भारतीय : यह भूवार कौनसा वार है?

मेधावी : (हँसकर) जिसे आप मंगलवार कहते हैं, वह यहाँ भूवार कहलाता है। जैसे आपके यहाँ मंगली संतान होती है, वैसे यहाँ 'भूईसंतान' होती है। (हँसकर) मेरा सहकारी भू नक्षत्र में ही पैदा हुआ था।

रूसी : आपने अभी परमात्मा का नाम लिया था। क्या आप लोग भी परमात्मा पर विश्वास रखते हैं?

अमेरिकी : क्या अपनी तरह सबको नास्तिक समझते हो? (मेधावी से) महाशय जी, कितने गिरजे होंगे इस मंगल लोक में?

मारुत : यहाँ इस नाम की कोई वस्तु नहीं है।

भारतीय : (अमेरिकी से) तुम तो सभी को ईसाई समझते हो। यह लोग आर्य हैं, आर्य (मारुत से) मंदिर हैं?

मारुत : नहीं, यहाँ मंदिर, मस्जिद, गिरजा कुछ भी नहीं है। हम इस प्रकार के धर्म को नहीं मानते। भ्रातृत्व ही हमारा धर्म है और हमारे हृदय ही परमात्मा के पूजागृह हैं।

भारतीय : (प्रसन्न होकर) प्यार को परमेश्वर तो हम भी मानते हैं।

मेधावी : हम केवल मानते ही नहीं उस पर आचरण भी करते हैं। आप लोग सोचते कुछ हैं, कहते कुछ और करते कुछ और ही हैं।

अंग्रेज : आप सत्य कहते हैं। (रूसी की ओर व्यंग्य से देखकर) हममें कुछ लोग ऐसा ही करते हैं। अच्छा, श्रीमान जी आपका राजा कहाँ है। हम उसके दर्शन करना चाहते हैं।

मेधावी : यहाँ कोई राजा नहीं है।

रूसी : यह समझते हैं कि इनकी तरह हर कोई राजतंत्र को पकड़े बैठा है। आज जनता का युग है, राजा का नहीं।

अमेरिकी : कदाचित आपके यहाँ हमारे देश की तरह राष्ट्रपति होता होगा। किस पद्‌धति से चुनाव होता है? प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष से?

मेधावी : यहाँ राष्ट्रपति भी नहीं है।

भारतीय : कदाचित आपने हमारी भाँति कई पद्‌धतियों का सम्मिश्रण किया है। आपके यहाँ भी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति दोनों ही होंगे।

मेधावी : जी नहीं, हमारे यहाँ कुछ भी नहीं है। यहाँ न राजा है न राज्य। न राष्ट्रपति है और

SCERT TELANGANA

न राष्ट्र। हमारा समाज राज्यहीन और वर्गहीन समाज है।

रूसी : (प्रसन्नता से) यह है सच्चा साम्यवाद। किसी की प्राप्ति की चेष्टा हम कर रहे हैं। मंगल के लाल होने का कारण अब स्पष्ट हुआ। (जोर से) लाल मंगल जिंदाबाद! लाल रूस जिंदाबाद!

अमेरिकी : (व्यंग्य से) लाल चीन को क्यों भूल गये?

रूसी : (व्यंग्य से) एक दिन अमेरिका भी लाल हो जाएगा।

अमेरिकी : (हँसी मुद्रा में) उनके रक्त से, जो उधर कुदृष्टि डालेंगे।

मारुत : आप लोग लड़ते क्यों हैं?

मेधावी : बिना लड़े ये लोग जिंदा नहीं रह सकते। इनका युद्ध शांति के लिए होता है। (हँसता है।) तभी तो इन्हें पुलिस और सेना की आवश्यकता होती है। इनके वैज्ञानिक संहारक यंत्रों का ही निर्माण करते हैं। इनके कवि और लेखक घृणा और हिंसा का ही प्रचार और प्रसार करते हैं।

रूसी : मैं आवेश में आ गया था, क्षमा चाहता हूँ।

अमेरिकी : और मैं भी।

अंग्रेज : ठीक है। (मेधावी से) तो क्या यहाँ पुलिस और सेना भी नहीं है? तब व्यवस्था कैसे होती होगी?

मेधावी : यहाँ सब संतुष्ट हैं। न कोई निर्धन है न धनी, न कोई ऊँच और न कोई नीच। यहाँ सब समान हैं। प्यार के बंधन से बंधे हैं। इसलिए सब कार्य सुचारु रूप से स्वतः होते हैं।

अमेरिकी : मैं समझता हूँ, अराजकतावादियों ने जिस समाज की कल्पना की है, वह यही है।

मेधावी : आप जो चाहे समझ सकते हैं। मैंने सही बात कह दी। हम शांति के पुजारी हैं। पुलिस और सेना का यहाँ क्या काम?

रूसी : फिर मशीनें?

मेधावी : मशीनें हमारी दास हैं, हम उनके दास नहीं। हमारी मशीनें ध्वंस नहीं, निर्माण करती हैं।

अमेरिकी : और यदि कोई आक्रमण करे तो?

मेधावी : तो उसका उपचार भी है। (छोटी पेटी खोलकर उससे अंडाकार एक गोला निकालकर दिखाते हुए) इस छोटे से गोले में आपके हजारों हाइड्रोजन बमों की शक्ति निहित है। आपकी पृथ्वी के लिए यही एक गोला बहुत काफी है। हमारे पास सैकड़ों हैं। (वह गोला यथास्थान रख देता है। चारों के मुखों पर भय और विस्मय के चिह्न हैं।)

अमेरिकी : इसमें हजारों हाइड्रोजन बमों की शक्ति है?

मेधावी : हाँ। इसे हम प्रलयंकर बम कहते हैं। आप लोगों को इसे मैंने केवल इसलिए दिखाया है, जिससे आप अपनी शक्ति पर गर्व न करें। आप लोगों की रक्तप्यास बढ़ती जा रही है। भू-लोक की इस हिंसा का प्रभाव और ग्रहों पर भी पड़ रहा है। हमें यह पसंद नहीं क्योंकि इससे हमारे महान उद्देश्य में बाधा पड़ती है।

SCERT TELANGANA

भारतीय : क्या है आपका महान उद्देश्य?

मेधावी : हमारा उद्देश्य है समस्त ग्रहों का संघ स्थापित करना। आपका भू-लोक उसमें सम्मिलित होगा?

अमेरिकी : हम तो सदैव से संघ में विश्वास करते हैं। हम भी शांति के पुजारी हैं। इसी उद्देश्य से एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था.....।

मेधावी : (बीच में ही) वह कैसी है, हम जानते हैं। यदि भू-लोकवासी एकत्र युद्ध से विरत नहीं होते तो फल बहुत बुरा होगा।

रूसी : क्या यह धमकी है?

मेधावी : यही समझ लीजिए। आपने मशीनें बनायीं, पर आज वे आपकी स्वामिनी हैं, आप उनके दास हैं। मानव स्वयं एक मशीन बन गया है, जिसके दिमाग तो हैं, पर हृदय नहीं । शांति की दुहाई देना ढोंग है। सब एक-दूसरे के रक्त के प्यासे हैं।

भारतीय : आप यह नहीं कह सकते। हमारा सदैव यह प्रयत्न रहा है कि विश्व में शांति रहे।

मेधावी : हाँ। आपके प्रयास अवश्य सच्चे और सराहनीय हैं। आप ही विश्व का नेतृत्व करें। आप ही इसे महानाश से बचा सकते हैं। (शेष तीनों से) सुन लीजिए आप लोग। यदि विश्व कल्याण चाहते हैं तो भारत का अनुकरण कीजिए। (तीनों मौन रहते हैं।)

मेधावी : चंद्र और मंगल लोक पहुँचकर उन पर अधिकार करने का दुस्साहस फिर न हो। हमारा प्रलयंकर बम देख ही चुके हो। आप लोगों के लिए आपकी पृथ्वी ही बहुत विशाल है। आँखें खोलकर, स्वार्थ का चश्मा उतारकर देखने भर की देर है। जाइए, यह है आपकी पृथ्वी के लिए हमारा संदेश। इसी में सब का कल्याण है।

सब : (उत्साह से) आप सच कहते हैं।

मेधावी : तब जाकर यह संदेश पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचा दीजिए। जाइए, आपका रॉकेट आपको भू-लोक तक वापस ले जाएगा।
(सब प्रसन्न होकर जाते हैं।)

मारुत : मानव मानेगा हमारा संदेशा?

मेधावी : क्यों नहीं? इसी में उनका हित है। तभी मंगल, मानव और मशीन का समन्वय हो सकेगा।

मारुत : (हँसकर) यह आपने ठीक कहा। मंगल, मानव और मशीन।

(ध्वनियंत्र से घरघराहट की तेज़ आवाज आती है, जो क्रमशः धीमी होती जाती है। मेधावी अपने यंत्र की ओर झुकता है। धीरे-धीरे यवनिका गिरती है।)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ - दस पंक्तियों में लिखिए।

1. मंगल ग्रह की विश्वकल्याण की भावना क्या है?
2. मंगल ग्रह के लोग मानव के संदर्भ में क्या विचार रखते हैं?
3. इस एकांकी में मशीनी सभ्यता पर किया गया व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'मंगल-लोक' नाम की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. इस एकांकी की भाषा शैली पर अपने विचार बताइए।

SCERT TELANGANA